बी.ए. संस्कृत –तृतीयवर्ष (2025–2026)

सेमेस्टर–V

Course Code : Sans

(काव्य, धर्मशास्त्र,कथासाहित्य एवं व्याकरण)

पूर्णांक– 150 अंक समय– 3 घण्टे

- इसमें आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा 30 अङ्कों की होगी।
- लिखित परीक्षा 120 अङ्कों की होगी। जिसमें 60 अंकबहुविकल्पीय प्रश्नों एवं 60 अंक वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिये निर्धारित हैं।
- 120 अंकों में से 20 प्रतिशत अंक के प्रश्नों का उत्तर संस्कृत माध्यम से देना होगा।

(काव्य, धर्मशास्त्र,कथा साहित्य एवं व्याकरण)

इकाई	विषय	अङ्क
I	रघुवंशम् (छटा सर्ग) –कालिदास	24 अङ्क
II	विदुरनीति–(महाभारत,उद्योग पर्व)–34वां अध्याय	24अङ्क
III	बालकाण्ड(रामायण)–प्रथम सर्ग–वाल्मीकि	24अङ्कं
IV	अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्रम्)–पं.विष्णु शर्मा	24अङ्क
V	कारकप्रकरण–द्वितीया,तृतीया,चतुर्थी एवं पंचमी विभक्ति के प्रमुख सूत्रों के आधार पर वाक्य निर्माण।	24 अङ्क

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	पाठ्यपुस्तक	लघूत्तरात्मक प्रश्न	अंक	निबन्धात्मक प्रश्न	अंक	योग
1.	रघुवंशम्(छटा सर्ग)	06(लघुत्तरात्मक /बहुविकल्पीय)	12	(i)दो पद्यों में से किसी एक की हिन्दी में व्याख्या (ii)दो पद्यों में से किसी एक पद्य की संस्कृत में व्याख्या।	1X6=06 1X6=06	12+06+06=24
2.	विदुरनीति-- 34वां अध्याय	06(लघुत्तरात्मक/ बहुविकल्पीय)	12	(i)दो पद्यों में से किसी एक की हिन्दी में व्याख्या (ii)एक निबन्धात्मक प्रश्न	1X6 =06 1X6 = 06	12+06+06=24
3.	बालकाण्ड(रामायण) –प्रथमसर्ग	06(लघुत्तरात्मक/ बहुविकल्पीय)	12	(i)दो पद्यों में से किसी एक की हिन्दी म व्याख्या (ii)दो पद्यों में से किसी एक पद्य की संस्कृत में व्याख्या।	1X6=06 1X6=06	12+06+06=24
4.	अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्रम्)–पं. विष्णु शर्मा	06(लघुत्तरात्मक/ बहुविकल्पीय)	12	(i)दो पद्यों में से किसी एक की हिन्दी में व्याख्या। (ii)एक निबन्धात्मक प्रश्न।	1X6=06 1X6 = 06	12+06+06=24
5.	कारकप्रकरण–द्वितीया,तृतीया,चतुर्थी एव पंचमी विभक्ति के प्रमुख सूत्रों के आधार पर वाक्य निर्माण	06(लघुत्तरात्मक/ बहुविकल्पीय)	12	(i) 10 में से किन्ही 6 कारक सूत्रों का प्रयोग करते हुए संस्कृत में वाक्य निर्माण।	6X2 = 12	12+12=24

परीक्षायोजना– (EOSE प्रारूप)

समयावधि – 3 घण्टे पूर्णाङ्क– 120

खण्ड–"अ" (60 अङ्क)

30 बहुविकल्पीय/लघूत्तरात्मक–प्रश्नों का निर्माण 30 X 02 = 60अङ्क।
(पाचों इकाइयों में से प्रत्येक इकाई से प्रश्न)

नोटः–सभी प्रश्न करने अनिवार्य है तथा प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों में देय होगा।

खण्डः –"ब" (84 अङ्क)

इकाई–प्रथम : रघुवंशम्(छटा सर्ग)

(i) दो श्लोको में से किसी एक श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या– 01X 06 = 06अङ्क।
(ii)दो श्लोकों में से किसी एक श्लोक की सप्रसङ्ग संस्कृत माध्यम से व्याख्या -- 01X 06 = 06अङ्क।

Scanned with CamScanner

इकाई–द्वितीयः–विदुरनीति (34वां अध्याय)

(i) दो श्लोको में से किसी एक श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या– 01X 06 = 06अङ्क।
(ii) एक निबन्धात्मक प्रश्न– 01X06= 06अङ्क।

इकाई–तृतीयः– बालकाण्ड(रामायण)–प्रथमसर्ग

(i) दो श्लोको में से किसी एक श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या– 01X 06 = 06अङ्क।
(ii)दो श्लोकों में से किसी एक श्लोक की सप्रसङ्ग संस्कृत माध्यम से व्याख्या – 01X 06 = 06 अङ्क।

इकाई–चतुर्थः– अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्रम्)–पं.विष्णु शर्मा

(i) दो श्लोको में से किसी एक श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या– 01X 06 = 06अङ्क।
(ii) एक निबन्धात्मक प्रश्न– 01X06= 06अङ्क।
इकाई– पंचमः– कारकप्रकरण–द्वितीया,तृतीया,चतुर्थी एवं पंचमी विभक्ति के प्रमुख सूत्रों के आधार पर 10 वाक्यों में से 6 वाक्यों का निर्माण – 06X02= 12 अङ्क।

खण्ड–ब प्रारूप आन्तरिक/सतत मूल्यांकन
(उपर्युक्त पाचों इकाईयों के आधार पर)

पूर्णाङ्क– 30

(i) कक्षा में उपस्थिति– 05 अङ्क।
(ii)कक्षा में प्रदर्शन– 05 अङ्क।
(iii)पाठ्यचर्या आधारित टर्म पेपर/ मिड टर्म टेस्ट– 10अङ्क।
(iv)पाठ्यचर्या आधारित सेमिनार/ परियोजना कार्य–10 अङ्क।

नोटः विद्यार्थीको **External Theory Paper (EOSE)**–120 अंक तथा **Internal Continuous Assessment (CA)**–30अंक में पृथक्–पृथक् उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

संदर्भ–ग्रन्थ–सूची/सहायकपुस्तकें–

रघुवंशम

1. रघुवंशम्–कालिदास ,चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।

महाभारत– विदुरनीति

2. विदुरनीति –डॉ. कृष्णकान्त शुक्ल, साहित्य भण्डार मेरठ।
3. विदुरनीति –श्री रेवतीरमण शास्त्री–यूनिक ट्रेडर्स , जयपुर।

Scanned with CamScanner

4. रामायण –वाल्मीकिकृत–, गीताप्रेस, गोरखपुर।
5. रामायण –वाल्मीकिकृत– के.सी. पख, निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई।
6. रामायणकालीन भारत –व्यास एवं पाण्डेय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
7.पंचतन्त्र अपरिक्षित कारक –डॉ, पुष्करदत्त शर्मा, अजमेराबुककम्पनी, जयपुर।
8.इन्द्रविजय–डॉ.श्रीकृष्ण ओझा, राज प्रकाशन मंदिर, चौडा रास्ता, जयपुर।
9. रचनानुवाद कौमुदी– कपिलदेव शास्त्री।

Scanned with CamScanner